भाई है मेरा।
छोटी सी थी,
जब मेरी ज़िन्दगी में वह आया,
उम्र केवल पाँच बरस की थी,
जब उसने मुझे बड़ी बहन बनाया।
शांति भरे घर को,
अपने रोने में डुबो दिया,
माता-पिता के शरीर में थकान लायी,
उनके चेहरे पर मुस्कान छाई।
नन्हा सा था वो,
पर जो हल्ला मचाता,
प्यारा सा था वो,
पर जो नखरे दिखाता।
बड़ी-बड़ी आाँखे, छोटा सा तन,
घूरता रहता वह सबको,
खाता,पिता, सोत,
और कुछ आता नही था उसको।
माँ का लाड़ला,
पापा का शेर,
औरों की हाँसी,
मेरी खुशी का पात्र बन गया था वो।
सबका ध्यान उस ही पर था,
मानो मुझे राज सिंहासन से निकाल फेके,
अकेले-अकेले एक कोने मैं बैठे,
मेरी आँखों मैं अश्रु आ ही गए।
गुस्से भरे मन से मैं देख रही थी उसको,
तब ही उसने मेरी ओर देखा,
दंतहीन मुस्कान दिखाकर,
मेरे दिल को पिघला दिया।
जी करता है बहुत डाँटू,
बोल दू उसे,'यह सब नहीं है तेरा!',
पर भूल जाती हूँ जैसे ही
सामने आता है वो,
क्या करू आखिर 'भाई है मेरा'।

ईशानवी मुरारका
८ बी